UNIT 1: व्यष्टि अर्थशास्त्र का परिचय

अर्थशास्त्र (Economics) अर्थ

अर्थशास्त्र

अर्थ → धन (wealth)

शास्त्र → अध्ययन (study)

धन का अध्ययन करना (study of wealth)

प्रो. एडम स्मिथ के अनुसार, ***"धन के विज्ञान को अर्थशास्त्र कहते है"।***

एडम स्मिथ की पुस्तक ***'Wealth of Nation'*** **(1776)** के अनुसार।

(नोट: एडम स्मिथ को अर्थशास्त्र का पिता कहा जाता है।)

विस्तृत अर्थ में,

सीमित साधनों की सहायता से असीमित आवश्यकता को पूर्ति करने से संबधित समस्त आर्थिक क्रियाओं के अध्ययन करने वाले शास्त्र को अर्थशास्त्र कहा जाता है।

एडम स्मिथ- धन सम्बन्धी विचारधारा

मार्शल - कल्याण संबंधी विचारधारा

रॉबिन्स - दुर्लभता/ सीमितता सम्बन्धी विचारधारा

नोबेल पुरस्कार विजेता **प्रो. सैमुअलसन** - विकास सम्बन्धी विचारधारा

अर्थशास्त्र की शाखाएं (Branches of Economics)

आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन व्यक्तिगत स्तर अथवा सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर किया जा सकता है।

नार्वे के अर्थशास्त्री ***रैगनर फ्रिश*** ने अर्थशास्त्र को दो शाखाओं में बांटा है:

1. **व्यष्टि अर्थशास्त्र (Microeconomics)**
2. **समष्टि अर्थशास्त्र (Macroeconomics)**

व्यष्टि अर्थशास्त्र (Microeconomics)

Micro → Mikros → Small (छोटा)

Economics → आर्थिक समस्यों का अध्ययन करना

अर्थव्यवस्था की छोटी एवं व्यक्तिगत आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करने वाला शास्त्र

व्यष्टि अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्था की व्यक्तिगत और सूक्ष्म इकाइयों का अध्ययन करती है जैसे: एक उपभोक्ता, एक उत्पादक, एक फर्म आदि।

बोल्डिंग के अनुसार, "व्यष्टि अर्थशास्त्र आर्थिक विश्लेषण की वह शाखा है जो विशिष्ट आर्थिक इकाइयों तथा अर्थव्यवस्था के सूक्ष्म भागों, उनके व्यवहार तथा उनके पारस्परिक संबंधों का अध्ययन करती है"।

व्यष्टि अर्थशास्त्र की विशेषताएँ (Features of Microeconomics)

1. व्यक्तिगत आर्थिक इकाइयों का अध्ययन।
2. इस अति सूक्ष्म चरों का अध्ययन।
3. व्यक्तिगत कीमत निर्धारण का अध्ययन।

व्यष्टि सूक्ष्म अर्थशास्त्र के क्षेत्र (Scope of Microeconomics)

मांग के सिद्धांत (Theories of Demand):

इसके अंतर्गत हम मांग फलन, मांग की लोच, उपभोक्ता संतुलन आदि का अध्ययन करते हैं।

उत्पादन का सिद्धांत (Theories of Production):

इसके अंतर्गत उत्पादन, फूलन, संतुलन, लाभ व आगम का विश्लेषण किया जाता है।

कीमत निर्धारण सिद्धांत (Theories of Price Determination):

इसके अंतर्गत हम यहाँ अध्ययन करते हैं कि वस्तुओं जैसे चावल, चाय, दूध, घी, पंखे और हजारों अन्य वस्तुओं की सापेक्ष कीमतें किस प्रकार निर्धारित होती है।

साधन कीमत निर्धारण सिद्धांत (Theories of Factor Pricing)

इसके अंतर्गत यह अध्ययन किया जाता है कि लगान मजदूरी, ब्याज लाभ का निर्धारण किस प्रकार से होता है। जो कि। विभिन्न साधनों से प्राप्त होता है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र का महत्त्व या प्रयोग

1. संपूर्ण अर्थव्यवस्था के ज्ञान के लिए आवश्यक
2. आर्थिक समस्याओं के निर्णय में सहायक
3. आर्थिक नीति के निर्धारण में सहायक
4. व्यवहारिक अर्थशास्त्र के ज्ञान में सहायक
5. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की कार्यप्रणाली के ज्ञान में सहायक
6. राजस्व में उपयोग
7. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में सहयोग
8. प्रबंध संबंधी निर्णयों में सहायक

व्यष्टि आर्थिक विश्लेषण की सीमाएं

1. यह अर्थव्यवस्था का अधूरा चित्र प्रस्तुत करता है
2. यह वास्तविक मान्यताओं पर आधारित है
3. कुछ विशेष प्रकार की समस्याओं के लिए अनुपयुक्त है
4. यह मुक्त व्यापार के विचार पर आधारित है
5. निष्कर्ष संपूर्ण अर्थव्यवस्था की दृष्टि से सही नहीं होते है

आर्थिक समस्या (Economic Problems) क्या है?

सीमित साधनों से असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दिए गए विभिन्न विकल्पों में से **सर्वश्रेष्ठ विकल्प** का चुनाव करना पड़ता है, जिससे चुनाव की समस्या कहते हैं। अर्थव्यवस्था में ***चुनाव की इसी समस्या*** को ***आर्थिक समस्या*** कहा जाता है।

आर्थिक समस्या के उत्पन्न होने के कारण (Causes of an Economic Problems)

1. असीमित आवश्यकताएँ
2. आवश्यकताओं की तीव्रता में अंतर
3. सीमित या दुर्लभ साधन
4. साधनों का वैकल्पिक प्रयोग
5. चयन या चुनाव की समस्या

अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्याएं (Central Problems of Economy)

प्रो. सैमुअलसन के अनुसार प्रत्येक अर्थव्यवस्था में साधनों के आवंटन की तीन प्रमुख मौलिक समस्याएं होती है:-

1. क्या उत्पादन किया जाए तथा कितनी मात्रा में किया जाए?
2. उत्पादन कैसे किया जाए?
3. उत्पादन किस के लिए किया जाए?

क्या उत्पादन किया जाए तथा कितनी मात्रा में किया जाए?

(What to Produce & How much to Produce?)

इस अर्थव्यवस्था की पहली केंद्रीय समस्या का संबंध ***चयन की समस्या*** से है।

प्रत्येक अर्थव्यवस्था की सबसे पहले समस्या यह है कि कौन सी वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जाए जिससे व्यक्तियों की अधिकतम आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके?

वस्तुओं का उत्पादन कितनी मात्रा में की जाये ?

उत्पादन कैसे किया जाए? (How to Produce?)

अर्थव्यवस्था के सामने दूसरी समस्या यह है कि चयनित वस्तुओं का उत्पादन कैसे किया जाए?

वास्तव में यह तकनीक के चुनाव की समस्या है। उत्पादन की तकनीक दो प्रकार की होती है

उत्पादन की तकनीक दो प्रकार की होती है-

- **श्रम प्रधान तकनीक (Labour Intensive Technique)**
- **पूंजी प्रधान तकनीक(Capital Intensive Technique)**

उत्पादन किसके लिए किया जाए? (For Whom to Produce?)

अर्थव्यवस्था में क्या कितना और कैसे जैसी समस्याओं के समाधान के बाद यह समस्या उत्पन्न होती है कि उत्पादन किस के लिए किया जाए?

वास्तव में, यह **उत्पादन के वितरण से संबंधित समस्या** है।

केंद्र के सामने यह समस्या रहती है कि किए गए उत्पादों को अर्थव्यवस्था में समान रूप से कैसे वितरण किया जाए?

वितरण की समस्या के दो प्रमुख पहलू है-

- व्यक्तिगत वितरण
- कार्यात्मक वितरण

उत्पादन संभावना वक्र (Production Possibility Curve - PPC)

सैमुअलसन के अनुसार,

"उत्पादन संभावना वह वक्र है जो दो वस्तुओं या सेवाओं के उन सभी संयोगों को प्रकट करता है जिनका अधिकतम उत्पादन एक अर्थव्यवस्था के दिए हुए साधनों तथा तकनीक के द्वारा साधनों के पूर्ण रोजगार की स्थिति में संभव होता है"।

उत्पादन संभावना वक्र उन दो या दो से अधिक वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को प्रदर्शित करने वाली रेखा है जिन्हें एक उत्पाद, स्थान या अर्थव्यवस्था दिए हुए संसाधनों और तकनीकी ज्ञान के द्वारा एक समय विशेष पर उत्पादित किया जा सकता है।

अर्थव्यवस्था में एक वस्तु के उत्पादन की मात्रा को बढ़ाने के लिए दूसरी वस्तु की मात्रा को कम करना पड़ता है।

यही कारण है कि *उत्पादन संभावना वक्र का झुकाव ऊपर से नीचे दाहिनी ओर होता है।*

उदाहरण

उत्पादन विकल्प सारणी

विकल्प	गेहूं (उपभोक्ता वस्तु) लाख टन	मशीन (पूंजीगत वस्तु) हजार इकाई
A	0	50
B	1	45
C	2	35
D	3	20
E	4	0

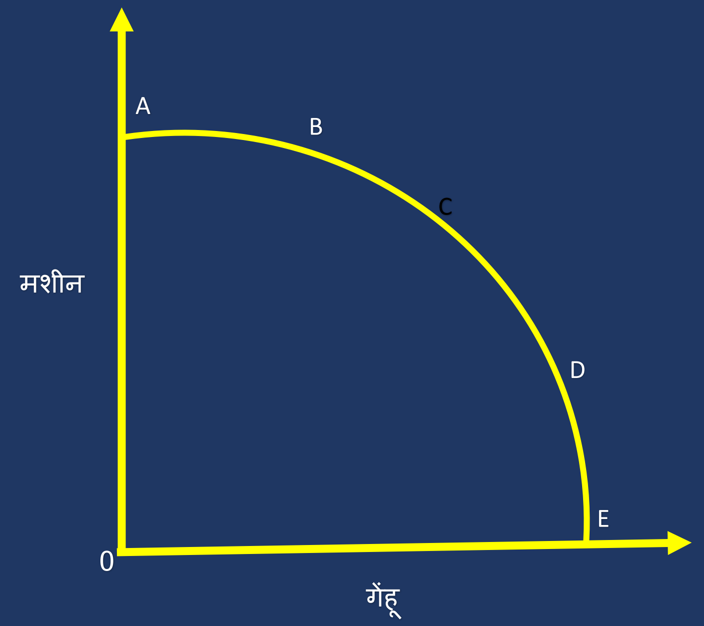

उत्पादन संभावना व्यक्त की मान्यतायें

- उत्पादन के साधनों की मात्रा स्थिर होनी चाहिए।
- उपलब्ध साधनों का पूर्ण एवं कुशल उपयोग होना चाहिए।
- उत्पादन की तकनीक में कोई परिवर्तन नहीं होने चाहिए।
- केवल दो वस्तुओं के उत्पादन होना चाहिए।

उत्पादन समान वक्र की विशेषतायें

- उत्पादन संभावना वक्र भाय से दाएं नीचे की ओर गिरता है।
- उत्पादन संभावना वक्त मूल बिंदु की ओर न तो दर होता है।

अवसर लागत (Opportunity Cost)

अवसर लागत की अवधारणा का विकास वास्तविक लागत के विचार में संशोधन करके हुई।

प्रो. बेनहम के शब्दों में, "किसी भी वस्तु की अवसर लागत वह सर्वश्रेष्ठ विकल्प है, जिसका उत्पादन उन्हीं उत्पत्ति साधनों के द्वारा उसी लागत पर उस वस्तु के विकल्प के रूप में किया जा सकता है"।

इस प्रकार, किसी साधन की अवसर लागत का भी प्राय उस साधन के दूसरे सर्वश्रेष्ठ वैकल्पिक प्रयोग में मिलने वाला मूल्य है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE AND SHARE THE CLASS LINK

SUBSCRIBE THE CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

WhatsApp/ 7830010683

FOLLOW ME ON INSTAGRAM/ theeconomicsguru

FOLLOW ME ON FACEBOOK / Nakul Dhali